रात्रि क्लास 27/11/68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

बाप तो समझाते हैं जैसे कर्म करेंगे वैसे देख और भी करेंगे। क्योंकि यह अथॉर्टी बहुत बड़ी है। इतना हौसला नहीं होता है रिगार्ड रखने की। शिव बाबा कितना ऊंच है। वह इस शरीर में है तो सही ना। यह कर्म करने वाला है। तो पहले2 सावधान इनको रहना पड़ता है। इनको बाप का रिगार्ड रखना है। मंजिल बड़ी भारी है। हमारा मोस्ट बिलवेड बाबा है। हमको नालेज पढ़ाते हैं। धर्मराज भी साथ में है। तो जितना रिगार्ड रखना चाहिए वह नहीं रहता। साधारण रहते हैं। तो रिगार्ड रखने की हिम्मत नहीं। बहुत साधारण है ना। अच्छे2 जिनको ~~मा~~ को ~~म~~ बाबा महावीर कहते हैं। बाबा देख रहे हैं अच्छे2 बड़े2 भी रिगार्ड रख नहीं सकते हैं। बाबा कब सभों के लिये तो कहते नहीं हैं। बाबा को देखने से ही शिव बाबा की याद आनी चाहिए। परन्तु साधारण होने कारण माया वह रिगार्ड रखने नहीं देती। फिर भी दुश्मन हैना। है खेल। दुश्मन आदि की बात नहीं। बाप ने समझाया है यह ड्रामा का खेल है जिसको साक्षी हो देखना है। बाप कहते हैं ऊंच पद पाने की कोशिश करो। इस समय यहां गोप बहुत अच्छे चल रहे हैं। बड़ी सम्भाल रखनी है। अपने भाग्य को ~~सह~~ सराहना चाहिए ना। जो जैसा करेंगे वैसा पावेंगे। अच्छा रिगार्ड देंगे तो 21 जन्म लिये अच्छा रिगार्ड पावेंगे। बाबा तो लिखते हैं ना सदैव जीते रहो बच्चे। माया कहां खलास न कर देवे। कदम2 पर जितना बाप को याद करेंगे उतना ही ऊंच। बाप से वरसा पूरा पाना चाहिए। बाबा तो हमेशा कहते हैं ड्रामा बिल्कुल ठीक चल रहा है। सिर्फ अपने ऊपर रहम कर कोशिश कर राजाई तिलक लायक बनना है। अपने पूछना पड़ता है मैं राज तिलक लायक हूं? बाप से पूछेंगे भी वही जो कुछ करते होंगे। पूछते थे बाबा हम भला पास आवेंगे। अभी बाबा क्या बतावेंगे। अभी तो पुरुषार्थ करना है। माया कम नहीं है। यहां सेफ है। बाहर बम्बई में तो कोई रहे। बम्बई है गिराने को। बायसकोप आदि तो बहुत ही गंदे हैं। यज्ञ सेवा का भी बहुत बड़ा पार्ट है। यज्ञ की जो सर्विस करते हैं वह प्रिय बहुत लगते हैं। मनसा वाचा कर्मणा सर्विस है ना। बाबा ने बच्चों का नाम ही रखा है साहबज़ादे और साहबज़ादियां। प्रिन्स-प्रिन्सेज की कालेज होती हैं। उनके मेंट में तो तुम बहुत ऊंच हो। तुम सच्च21 जन्म लिये बनते हो। वह तो एक जन्म लिये बनते हैं। तुम 21 जन्मों के लिये बनते हो। वह प्रिन्स-प्रिन्सेज हैं पढ़ते हैं। तुम 21 जन्म लिये बनते हो। तुम ब्राह्मणों ब्राह्मणियों जैसा महान भाग्यशाली कोई हो नहीं सकता। जिनको स्वयं परमात्मा पढ़ाते हैं। ऐसे बाप के बच्चों की चलन कितनी आलीशान होनी चाहिए। पद भी आलीशान लेने वाले हैं। बाहर की जो है गर्म हवा माया की लगती है। ऐसे आती जरूर है। भल सर्विस स्थूल बच्चे हैं। तुम भी जितना यहां याद की यात्रा में रहेंगे उतना बाहर में नहीं रह सकेंगे। एक ही मन्मनाभव का महामंत्र है। कमाई करने का। बाकी सब है गवांने का। अच्छा रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट और नमस्ते।

***